OM-2- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 25/03/2021 6:18 PM Page 5

बाबा कहते... बच्चे! मिट्टी में पांव नहीं रखना

दादी हमेशा कहतीं, हम बाबा के लाडले बच्चे हैं ना! लाडले बच्चे बाबा के प्यारे बच्चे कभी धरती पर पांव नहीं रखो। क्योंकि हम बाबा के दिल के झूले में झूलने वाले बच्चे हैं, बाबा की गोद में जाकर बैठना है, बाबा के दिलतख्त पर बैठना है। हमें बाबा ने अपना दिलतख्त दिया है तो धूल-मिट्टी पर पांव नहीं रखना। देखो, परमात्म तख्त हमें मिल गया है, जिसे पाने के लिए भक्त लोग प्रार्थनायें करते रहते हैं। और हमें स्वयं बाबा ने दिलतख्त दिया है। कितने भाग्यशाली हैं हम! सोचो, हमें खेलना है तो धूल-मिट्टी में नहीं खेलना, धूल-मिट्टी माना देह-अभिमान। देह-अभिमान के वश कोई भी कार्य हमें नहीं करना है।

मधुबन का वायुमण्डल इतना न्यारा और प्यारा है कि जहाँ सारे ब्रह्मा वत्स आकर आपस में मिलते हैं। ये रूहानी आकर्षण दिव्य अलौकिक आभा से आलोकित है। ऐसे वातावरण में हमें अपने पुरुषार्थ की रफ्तार को और तीव्रता से बढ़ाना चाहिए।

ब्रह्मा बाबा ने लास्ट में क्लास कराने के बाद तीन शब्द उच्चारण किये, निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी। ये तीन शब्द अगर हम सोचें तो हम भी तीव्र पुरुषार्थी बन जायेंगे। तीव्र पुरुषार्थी माना अपने आप से पूछो 'मैं कौन'। तीव्र पुरुषार्थी और स्लो पुरुषार्थी के बीच एक शब्द का अंतर होता है। तीव्र पुरुषार्थ वाला हमेशा ये सोचेगा कि जो बाबा ने कहा है, वो मुझे करना 'ही' है। जबकि स्लो पुरुषार्थी 'करेंगे, हो जायेगा, अभी तो समय पड़ा है, समय आने पर कर लेंगे' ये 'गें...गें...' वाला स्लो पुरुषार्थी की श्रेणी में आ जायेगा। तो हमें तो एक ही शब्द याद रखना है कि जो बाबा ने कहा, वो मुझे करना 'ही' है। तीव्र पुरुषार्थी कभी ये नहीं सोचेगा कि कैसे होगा, लेकिन मुझे करना ही है, इस विश्वास के साथ करने लग जायेगा। स्लो पुरुषार्थी बीच-बीच में यह सोचेगा कि अभी तो डेट फिक्स नहीं हुई है, अभी कौन सम्पूर्ण बना है, समय पर हो जाऊंगा, ये है स्लो पुरुषार्थी। तो स्लो पुरुषार्थी और तीव्र पुरुषार्थी, आप कौन-सा बनना चाहेंगे? समय प्रति समय बाबा हमें समय की नॉलेज दे रहे हैं। हो जायेगा नहीं, करना ही है। बाबा का कहना और हमारा करना, बस। तब ही बाबा के दिलतख्त पर भी बैठ सकेंगे और मंज़िल पर भी पहुंचेंगे। अभी तीव्र पुरुषार्थ करने का समय है, फास्ट जाने का समय है। बाबा ने इशारा दिया है, और हमें करना ही है। तो ऐसे बाबा को बड़े प्यार से कहो, मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा, तो बस, तीव्र पुरुषार्थी बन जायेंगे।

96 वर्षीय दादी रतनमोहिनी ब्रह्माकुमारी संस्थान की बनीं मुखिया

शांतिवन। ब्रह्माकुमारी संस्थान ने दादी हृदयमोहिनी जी के निधन के पश्चात् 96 वर्षीय राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी को संस्थान के अंतर्राष्ट्रीय स्पीरिचुअल ऑर्गनाइज़ेशन की आध्यात्मिक मुखिया नियुक्त किया है। 16 मार्च, 2021 को मैनेजमेंट कमेटी की बैठक में यह निर्णय लिया गया। दादी रतनमोहिनी अब विश्व के 5500 से ज़्यादा सेवाकेन्द्रों व सभी शहरों से लेकर गांव-ढाणियों में संचालित होने वाले 30 हज़ार से अधिक पाठशालाओं की आध्यात्मिक मुखिया भी होंगी। इससे पहले उनके पास संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका का दायित्व था। दादी रतनमोहिनी का जन्म 25 मार्च,1925 को सिंध हैदराबाद में हुआ था। वे 11 साल की उम्र में ब्रह्माकुमारी संस्थान के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के संपर्क में आईं। दादी देश के 4600 से अधिक सेवाकेन्द्रों की 46 हज़ार बहनों को प्रशिक्षण दे चुकी हैं। ब्रह्माकुमारी संस्थान के सूचना निदेशक ब्र.कु. करुणा के अनुसार राजयोगिनी ईशू दादी एडिशनल स्पीरिचुअल चीफ तथा ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी ज्ञान सरोवर एकेडमी में ज्वाइंट स्पीरिचुअल चीफ का प्रभार देखेंगी।

मीडिया सेवाओं के पुरोधा प्रो. कमल दीक्षित को हृदय से श्रद्धासुमन

ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया विंग की सेवाओं के आधार स्तंभ, अपनी निर्माणता द्वारा नव निर्माण का कार्य करने वाले, हम सबके स्नेही, अथक सेवाधारी प्रो. कमल दीक्षित जी ने दिनांक 10 मार्च 2021 को अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। आपके अलौकिक जीवन की शुरुआत तब हुई जब आप आज से लगभग 45 वर्ष पूर्व इंदौर में नव भारत टाइम्स के सम्पादक थे। तब इंदौर ज़ोन के क्षेत्रीय निदेशक रहे आदरणीय ओमप्रकाश भाईजी के सम्पर्क में आये और उनसे पहली मुलाकात में ही ब्रह्माकुमारी संस्थान के प्रति आपका उच्च दृष्टिकोण बन गया और आप राजयोग शिविर हेतु माउण्ट आबू गये, तब से लेकर सतत् आपका संस्था से सम्पर्क बना रहा और आगे चलकर आप रेगुलर स्टूडेंट बन गये। ओमप्रकाश भाईजी की प्रेरणा से प्रतिवर्ष मुख्यालय आबू में होने वाली मीडिया कॉन्फ्रेन्स में आप मुख्य वक्ता के रूप में भाग लेते रहे तथा सारे भारत वर्ष में आपने मीडिया के अनेक कार्यक्रम आयोजित किये एवं मीडियाकर्मियों के लिए 'सकारात्मक मीडिया' पाठ्यक्रम तैयार किया।

यज्ञ में ऐसे कम लोग हैं जिनकी राष्ट्रीय स्तर पर अपनी स्वयं की पहचान हो, आदरणीय कमल दीक्षित जी ऐसे ही गिने-चुने लोगों में से एक थे। आपने ब्रह्माकुमारी संस्थान में मीडिया की नई पौध तैयार करने में अहम भूमिका निभाई। आपके अंदर विशेष मीडिया के माध्यम से बाबा को प्रत्यक्ष करने का ऐसा जुनून था जिसके तहत आपने मूल्यानुगत मीडिया अभिक्रम समिति का गठन किया एवं राजी-खुशी नामक पत्रिका के माध्यम से अध्यात्म को जन-जन तक पहुंचाने में विशेष रोल अदा किया। मीडिया जगत के लोगों को ब्रह्माकुमारी संस्थान के निकट लाने में अपने सराहनीय योगदान के लिए सदैव याद किये जायेंगे।

बाबा के ऐसे लाडले, अनमोल रतन, विश्व सेवाधारी प्रो. कमल दीक्षित जी को सहृदय से श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

- नेशनल कनवेनर,सोसायटी ऑफ मीडिया इनीशिएटिव फॉर वैल्यूज़(एस.एम.आई.वी.)
- एडिटर, 'राजी-खुशी'- एडिटर, 'मुल्यानुगत मीडिया' मैगज़ीन(प्रोमोटिंग वैल्यू-बेस्ड जर्नलिज़्म)
- कोर कमेटी मेम्बर,ब्रह्माकुमारीज़,मीडिया विंग
- पूर्व एच.ओ.डी.,जर्नलिज़्म,माखनलाल चतुर्वेदी नेशनल युनिवर्सिटी ऑफ जर्नलिज़्म,भोपाल
- पूर्व रेसिडेंट एडिटरः नव भारत,इंदौर; राजस्थान पत्रिका,जयपुर; महाकौशल डेली,रायपुर
- प्रोमोटर, ट्रेनर एंड रिसर्चर ऑफ वैल्यू बेस्ड मीडिया, मीडिया
- राइटिंग स्किल, रूरल जर्नलिज़्म एंड डेवलपमेंट कम्युनिकेशन।

फिल्म अभिनेत्री रवीना टंडन से मिलते हुए भेंट करते हुए दादी हृदयमोहिनी जी।

फिल्म अभिनेत्री रवीना टंडन को ईश्वरीय सौगात देते हुए दादी हृदयमोहिनी जी।

सीनियर राजनीतिज्ञ लाल कृष्ण अडवानी जी के साथ दादी हृदयमोहिनी जी।

महामहिम राष्ट्रपति सर्वेपल्ली राधाकृष्णन जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् साथ हैं दादी हृदयमोहिनी जी।

आध्यात्मिक कार्यक्रम में शंकराचार्य जी के साथ दादी हृदयमोहिनी जी।

भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्रीमति प्रतिभा पाटिल के साथ दादी हृदयमोहिनी जी।

राजस्थान की माननीय मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के साथ दादी हृदयमोहिनी जी।

अमेरिका नासा की अंतरिक्ष वैज्ञानिक सुनीता विलियम्स को शिव स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए दादी हृदयमोहिनी जी।